B- III
L- 38
MIH

क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद का दूसरा चरण।

1925 - काकोरी ट्रेन डकैती कांड

↳ शहीद - अशफाकउल्ला
राम प्रसाद बिस्मिल
रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी

↳ हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन

1928 में HSRA - पिल्ली - चन्द्रशेखर आजाद

सहयोगी - भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त
सुखदेव, राजगुरु, विजय सिन्हा
जयदेव कपूर, भगवती चरण
बोहरा,

* बम का दर्शन (पुस्तक) - ~~लेखक~~ - भगवती चरण बोहरा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रमुख घटनाएँ -

• Dec. 1928 - सांडर्स हत्याकांड

↳ लाहौर षड्यंत्र केस - फाँसी की सजा
भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव
23 मार्च 1931

अप्रैल 1929 - केन्द्रीय विधान सभा में भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंका।

Scanned by CamScanner

• 1929 में ही चन्द्रशेखर आजाद ने इरविन की हत्या की कोशिश की।

• 1931 में इलाहाबाद में पुलिस मुठभेड़ में चन्द्रशेखर आजाद ने खुद को गोली मारी।

भगत सिंह - • नौजवान भारत सभा एवं लाहौर छात्र संघ की स्थापना।

• मैं नास्तिक क्यों हूँ- बुक।

• साम्प्रदायिकता के आलोचक थे।

• इनके लिए क्रान्ति का अर्थ था राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति।

• व्यक्तिगत वीरता से अधिक युवाओं में क्रान्तिकारी चेतना के प्रसार के पक्ष में

बंगाल की घटनाएँ :-

• 1924 - गोपीनाथ साहा ने बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की हत्या की कोशिश की।

• 1930 - सूर्यसेन के इंडियन रिपब्लिकन आर्मी (IRA) के द्वारा चटगांव शस्त्रागार को लूटा गया।

Scanned by CamScanner

महिला क्रान्तिकारी - प्रीतिलता, कल्पना दत्ता (IRA) से जुड़ी।

शान्ति घोष, सुनीति चौधरी

बीना दास - गवर्नर को गोली मारी

उजाला मजूमदार

1930 में विनय, बादल व दिनेश ने कलकत्ता में एक पुलिस अधिकारी की हत्या की।

क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद की विशेषता

- लक्ष्य - अंग्रेजों को भारत से निकालने के साथ-साथ भारत में समाजवाद एवं गणतंत्र की स्थापना
- संगठित → उपरोक्त
- हिंसक उपरोक्त

सामाजिक आधार :-

क्रान्तिकारी गतिविधियों में शिक्षित युवाओं की इस चरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। क्रान्तिकारी गतिविधियों के साथ जन संवेदना स्पष्ट तौर पर दिखाई पड़ने लगी।

Scanned by CamScanner

- क्रान्तिकारी गतिविधियों में महिलाओं की अप्रत्यक्ष के साथ-साथ प्रत्यक्ष भूमिका थी।
- इस चरण में क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद वैचारिक रूप से भी अधिक समृद्ध था जैसे मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव सामाजिक आर्थिक न्याय पर बल इत्यादि पहलुओं को देख सकते हैं।
- अखिल भारतीय स्तर पर क्रान्तिकारी गतिविधियों का प्रसार शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों से भी दिखाई देने लगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

किसान विद्रोह / आंदोलन (ब्रिटिश काल में)

तीन चरण

1. 1757 से 1857 के मध्य अधिकतर नागरिक विद्रोह हुए

⇓

{अपवाद - 1783 - रंगपुर विद्रोह हुआ था (किसान विद्रोह)}

2. 1858 से 1915 - • नील विद्रोह 1858-59 - गोविन्द एवं विष्णु विश्वास नेता

• पबना विद्रोह - 1873-76 → बंगाल

⇓

नेता - शम्भूपाल, ईशानचन्द्र

• दक्कन विद्रोह - 1875 → महाराष्ट्र

सामान्य विशेषता :-

• भू-राजस्व बंदोबस्त के साथ-साथ किसानों में असंतोष के कुछ तात्कालिक कारण थे जैसे किसानों से जबरन नील की खेती कराना, अवैध कर वसूलना।

पबना में किसानों पर भू-राजस्व का अधिक दबाव एवं जमींदारों के द्वारा किसानों को बेदखल करना।

• दक्कन में कपास के फसलों को नुकसान, भू-राजस्व में वृद्धि और महाजनों के द्वारा किसानों का शोषण।

Scanned by CamScanner

• तीनो विद्रोह का लक्ष्य था शोषण से मुक्ति न कि पुरानी व्यवस्था की स्थापना।

• तीनो विद्रोह के दौरान सरकार को प्रत्यक्ष तौर पर निशाना नही बनाया गया इससे सरकार को कुछ राहत भी मिली. जैसे - 1859 एवं 85 में बंगाल काश्तकारी अधिनियम, 1860 में नील आयोग का गठन और जबरन नील की खेती पर रोक, 1879 मे दक्कन कृषक राहत अधिनियम इत्यादि।

• हिंसक एवं अहिंसक दोनों ही मोर्चो पर संघर्ष किया गया जैसे कानूनी लड़ाई, महाराष्ट्र में महाजनो का सामाजिक बहिष्कार इत्यादि।

• विद्रोह के दौरान संगठित होने का प्रयास।

• बुद्धिजीवियों का इन्हें समर्थन मिला जैसे पबना को इंडियन एसोसिएशन का, दक्कन उपद्रव को पूना सार्वजनिक सभा का।
और हिन्दू पैट्रियोट (हरीश मुखर्जी) नील दर्पण (दीनबन्धु मित्र 1800) ने नील विद्रोह का समर्थन किया।

• उपरोक्त तीनों विद्रोह वर्गीय चेतना पर आधारित।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

3. तीसरा चरण - 1915 - 1947

- 1917 चम्पारण सत्याग्रह
- 1918 में खेड़ा सत्याग्रह
- 1918 में उत्तर प्रदेश किसान सभा - मालवीय जी एवं अन्य
- 1920 मे अवध सत्याग्रह - जवाहर लाल नेहरू, बाबा रामचन्द्र
- 1921 में एका आन्दोलन : UP मदारी, पासी
- 1921 में मोपला विद्रोह - केरल
  - मुस्लिम किसान
  - जेनमी - जमींदार
- 1928 में बारदोली सत्याग्रह (गुजरात) वल्लभ भाई पटेल
- 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा (लखनऊ)
  अध्यक्ष - सहजानंद सरस्वती
  सचिव - एन जी रंगा
- 1945 में वर्ली विद्रोह - महाराष्ट्र - गोदावरी पुरुलेकर
- 1945 में पुनप्रवायलर विद्रोह - केरल
- 1946 - तेभागा - बंगाल - मुजफ्फर अहमद, मोनी सिंह इत्यादि।
- 1946 से 51 → तेलंगाना - छापामार युद्ध शैली में किसानों द्वारा विद्रोह किया गया।

Scanned by CamScanner

- 1940 के दशक के विद्रोहों में मार्क्सवादियों का विशेष प्रभाव।

तीसरे चरण की सामान्य विशेषता :-

इस चरण में किसान आन्दोलन की दो धाराएँ दिखाई पड़ती हैं। एक कांग्रेस के नेतृत्व में तथा दूसरा मार्क्सवादियों के प्रभाव में।

हालांकि किसानों ने एक वर्ग के रूप में अलग से भी संगठित होकर अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

- आन्दोलन राष्ट्रीय चेतना एवं वर्गीय चेतना से युक्त तथा उपनिवेशवाद की समझ पर संगठित आन्दोलन।
- कांग्रेस के नेतृत्व में अहिंसक संघर्ष, वहीं मार्क्सवादियों के नेतृत्व में हिंसक संघर्ष
- बुद्धिजीवियों का व्यापक समर्थन।
- साम्प्रदायिक चेतना का प्रभाव किसानों पर भी दिखा। जैसे - मोपला विद्रोह
- किसान आन्दोलन या विद्रोह क्षेत्रीय स्तर पर संचालित हुआ और अखिल भारतीय स्तर पर भी।
- प्रायः क्षेत्रीय आन्दोलन का राष्ट्रीय दृष्टिकोण से

Scanned by CamScanner

महत्व दिखाई पड़ता है।

- क्योंकि किसानो ने सरकार एवं जमींदारों से विद्रोह किया जिससे किसानों को कोई विशेष राहत सरकार से नहीं मिली।

आदिवासी विद्रोह

कौन :- आदिवासी या जनजातीय समुदाय वे आशय हैं मुख्य धारा से अलग-थलग रहने वाले समुदाय जैसे- वन बाहुल्य क्षेत्र या पर्वतीय एवं पठारी क्षेत्रो में। वे आर्थिक रूप से सामूहिक सम्पत्ति की अवधारणा तथा जीवन यापन के लिए प्रकृति पर निर्भरता तथा सामाजिक रूप से अलग भाषा लिपि पूजा पाठ की पद्धति इत्यादि तथा राजनीतिक रूप से स्वायत्त जीवन व्यतीत करते थे।

Scanned by CamScanner